**ओ३म्**

**-दीपावली एवं ऋषि दयानन्द बलिदान दिवस पर-**

**“सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन अविद्या दूर कर ज्ञानी बनाता है”**

**-मनमोहन कुमार आर्य, देहरादून।**

 दीपावली का पर्व कार्तिक अमावस्या की रात्रि के अन्धकार को दीपमाला जलाकर, अन्धकार को किंचित मात्रा में दूर कर मनाया जाता है। जो लोग इस दीपमाला का इतना ही महत्व मानते हैं वह दीपावली का अधूरा ज्ञान रखते हैं। दीपक सीमित मात्रा में अन्धकार दूर करने का प्रतीक है। प्रकाश के अन्धकार से अधिक जीवन में अज्ञान के अन्धकार को दूर करने का महत्व है। जिस मनुष्य के जीवन में अज्ञान छाया हुआ है वह यदि दीपावली का पर्व दीप जला कर मनाता है तो वह क्षम्य हो सकता है परन्तु दीपक जलाने का अर्थ होता है कि जीवन से सभी प्रकार का अन्धकार व कालिमा को दूर करना। हमारे जीवन में सबसे अधिक अन्धकार ईश्वर व आत्मा के यथार्थ ज्ञान का है। इसी कारण हमारा चरित्र भी कालिमा के समान प्रायः दूषित रहता है। हम सद्कर्म और असद्कर्म में अन्तर नहीं कर पाते और प्रलोभनों में फंस कर अकरणीय कृत्यों व अकर्तव्यों को कर बैठते हैं। इस पर विजय प्राप्त करने के लिए हमें सद्ज्ञान की आवश्यकता है जिसका मूल स्रोत ईश्वरीय ज्ञान की चार पुस्तकें वेद हैं। इनके नाम ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं जो सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर के द्वारा चार ऋषियों के अन्तःकरण में प्रविष्ट कराये गये थे। आज भी यह अपने मूल रूप में सुरक्षित हैं और यह संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी भाषा सहित कुछ इतर भाषाओं में भी प्राप्त है।

 मनुष्य जीवन में परमात्मा ने सभी को बुद्धि दी है। बुद्धि का विकास ज्ञान का विकास माना जाता है। कहा गया है कि बुद्धि ज्ञान से शुद्ध होती है। जो व्यक्ति ज्ञानार्जन नहीं करता उसके पास भौतिक बुद्धि यन्त्र होने पर भी ज्ञान की दृष्टि से वह अपने जीवन को विवेकपूर्वक व्यतीत नहीं कर सकता। अतः जन्म के कुछ वर्षों बाद ही बालक को पहले घर में और बाद में विद्यालय या गुरुकुल में अध्ययन करने भेजा जाता है। आज कल न केवल भारत अपितु संसार भर के स्कूलों वा विद्यालयों में भौतिक विद्याओं व समाज विषयक सामान्य ज्ञान ही पढ़ाया जाता है। उसे ईश्वर, जीव व प्रकृति एवं धर्माधर्म विषयक यथार्थ ज्ञान नहीं दिया जाता। इसलिए आवश्यकता होती है कि वह अपने घर पर रहकर व पुस्तकों अथवा आर्यसमाज जैसी संस्थाओं का सदस्य बनकर वहां होने वाले आयोजनों व उपदेशों से अपना ज्ञान बढ़ाये और विद्वानों से शंका समाधान करता रहे। आर्यसमाज एक ऐसी संस्था है जहां विद्वान सभी विषयों पर विचार करते हैं और श्रोता की हर शंका का समाधान करते हैं। अन्य संस्थाओ ंमें यह परिपाटी है कि उनके मत की पुस्तकों में जो सही व गलत लिखा है उससे वह बाहर नहीं जा सकते। इसलिए हमें यह लगता है कि किसी भी मत का अनुयायी अपने मत व उसकी पुस्तक के अल्प ज्ञान से आगे नहीं बढ़ सकते। इससे उनका ज्ञान व उन्नति अल्प व अपूर्ण होती है और बहुत से विषयों से वह अनभिज्ञ रहते हैं। वेद व वैदिक साहित्य में निहित सत्य ज्ञान से होने वाले लाभों से वह सर्वदा वंचित रहते हैं।

ज्ञान मनुष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण व बहुत अच्छी वस्तु है जिसे प्राप्त करने के लिए मनुष्य को मनुष्य जन्म मिला है। कहा गया है कि ज्ञान से बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं है। वैदिक धर्मी लोग ज्ञान प्राप्त करने में किसी अन्धविश्वास से ग्रस्त नहीं हैं। आर्यसमाजी को वेदों के साथ पुराण व अन्य सभी मतों के ग्रन्थों के अध्ययन करने की छूट है और वह करते भी हैं। अतीत में आर्यसमाज के पास बाइबिल, कुरान और पुराण आदि ग्रन्थों के भी बहुत बड़े बड़े विद्वान रहे हैं। आज भी आर्यसमाज में प्रायः सभी मतों का अल्प व अधिक ज्ञान रखने वाले सदस्य व विद्वान हैं। दूसरे किसी मत में यह बात नहीं है। सत्यार्थप्रकाश सत्य ज्ञान की पुस्तक है। इस पर भी विधर्मी व अन्य मत वाले लोग इसका अध्ययन नहीं करते। विचार करने पर यह ज्ञात होता है कि वह जानते हैं कि उनके मत की मान्यतायें अपूर्ण, विद्याविरुद्ध व भ्रम पैदा करने वाली हैं जिनका समाधान उनके पास नहीं है। यदि उनके मत के अनुयायी सत्यार्थप्रकाश या वेद आदि पढ़ेंगे तो इन ग्रन्थों के सत्य विद्यायुक्त होने से अन्य मतों के अनुयायियों के विचार व भावनायें कहीं वैदिक धर्मी न हो जायें, यह डर अन्य सभी मतों के आचार्यों को होता है। इस कारण अन्य मत के लोग वेद व वैदिक साहित्य से परिचित व लाभान्वित नहीं हो पा रहे हैं। दूसरा कारण यह भी है कि आज हर व्यक्ति उस कार्य में रूचि लेता है जिससे धन का लाभ होता है। वैदिक धर्म को जानने व समझने के लिए उपदेश श्रवण सहित पुस्तकों का अध्ययन, समय व उस पर चिन्तन मनन करना आवश्यक होता है। इससे आर्थिक कार्यो में लगे लोग समयाभाव के कारण भी रूचि नहीं लेते। इस कारण भी वैदिक धर्म व साहित्य का प्रचार होने में बाधायें आ रही हैं।

अन्य मत मतान्तरों के ग्रन्थों में सिद्धान्त की बातें कम व न के बराबर एवं कहानी किस्से अधिक हैं जबकि वेद और सत्यार्थ प्रकाश में सिद्धान्त, सत्य विचार व उनका स्पष्टीकरण हैं न कि अनावश्यक कहानी किस्से। हम यहां सत्यार्थप्रकाश में वर्णित विषयों की एक संक्षिप्त सूची दे रहे हैं जिससे अनुमान लगाया जा रहा है कि इस ग्रन्थ का महत्व क्या है? सत्यार्थप्रकाश के पहले समुल्लास में ईश्वर के 100 से अधिक नामों की व्याख्या एवं मंगलाचरणसमीक्षा है। दूसरे समुल्लास में बालशिक्षा, भूतप्रेतादिनिषेध, जन्मपत्रसूर्यादिग्रहसमीक्षा आदि अनेक विषय हैं। तीसरे समुल्लास में अध्ययनाध्यापन, गुरुमंत्र वा गायत्रीमन्त्र व्याख्या, प्राणायामशिक्षा, सन्ध्याग्निहोत्रोपदेश, यज्ञपात्रों का वर्णन, उपनयन संस्कार समीक्षा, ब्रह्मचर्योपदेश, ब्रह्मचर्य के कृत्यों का वर्णन, पठनपाठन की विशेष विधि, स्त्री शूद्र अध्ययन विषय आदि हैं। चौथे समुल्लास में विवाह का विस्तृत विषय है, गुण, कर्म, स्वभावानुसार वर्णव्यवस्था का वर्णन है, स्त्री पुरुष व्यवहार, पंचमहाज्ञविधि, पाखण्ड के लक्षण, गृहस्थ धर्म, पण्डित और मूर्खों के लक्षण, पुनर्विवाह और नियोग आदि विषय हैं। पांचवे समुल्लास में वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम का विषय वर्णित है। छठे समुल्लास में राजधर्म विषय की विस्तार से चर्चा की गई है। सातवां समुल्लास महत्वपूर्ण है जिसमें ईश्वर विषय, ईश्वर स्तुति, प्रार्थना व उपासना विषय, ईश्वर ज्ञान प्रकार, ईश्वर का अस्तित्व, ईश्वर के अवतार का निषेध, जीव की स्वतन्त्रता, ईश्वर व जीव की भिन्नता का वर्णन, ईश्वर के सगुण व निगुर्ण स्वरूप का वर्णन और वेद से संबंधित ऐसे विचार हैं जिनका ज्ञान अन्यत्र दुर्लभ व अप्राप्य है। आठवें समुल्लास में प्रथम सृष्टि की उत्पत्ति आदि का विषय वर्णित है। इतर विषयों में ईश्वर से भिन्न सृष्टि के उपादान कारण प्रकृति का वर्णन है। इसके बाद नास्तिक मतों का निराकरण भी किया गया है। मनुष्य इस सृष्टि की आदि में कब व कहां उत्पन्न हुए इसका वर्णन भी आठवें समुल्लास में है। ईश्वर द्वारा इस जगत को धारण करने आदि अनेक विषय भी इस आठवें समुल्लास में हैं। नवें समुल्लास में विद्या अविद्या तथा बन्धन और मोक्ष का विषय वर्णित है। दसवें समुल्लास में आचार-अनाचार विषय सहित भक्ष्य-अभक्ष्य विषय वर्णित हैं। इसके बाद चार समुल्लास और हैं जिनमें वेद से इतर सभी मत मतान्तरों की मान्यताओं व सिद्धान्तों की सत्य मापदण्डों के आधार पर समीक्षा कर उनकी परीक्षा की गई है। सत्यार्थप्रकाश वस्तुतः वेद और मनुस्मृति के बाद महत्वपूर्ण धर्मग्रन्थ है और अन्य किसी धर्म ग्रन्थ की श्रेष्ठता में सत्यार्थप्रकाश से तुलना नहीं की जा सकती।

सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन करने से ईश्वर, जीवात्मा और प्रकृति का यथार्थ व सत्य सत्य ज्ञान मनुष्य व पाठक को होता है जो संसार के अन्य ग्रन्थों को पढ़ लेने पर नहीं होता। सत्यार्थ प्रकाश ऐसा ग्रन्थ है जो अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करता है और अन्य ग्रन्थ अविद्या की वृद्धि कर रहे हैं। विद्या उनमें नाम मात्र ही हो सकती है। इन मतों की अविद्या के कारण ही आज देश, विश्व व समाज में अशान्ति व समस्यायें हैं। यदि वेद व सत्यार्थप्रकाश को संसार में अपना लिया जाये तो अविद्या दूर हो सकती है और इसका परिणाम देश व विश्व में शान्ति होगी। आतंकवाद समाप्त हो जायेगा। इससे दो देशों के विवाद सदभावना से हल किये जा सकते हैं। वेद धर्मपूर्वक राज्य व शासन करने की बात करता है। वेद के अनुसार संसार के सभी मनुष्य व जीव जन्तु, पक्षु व पक्षी एक परमात्मा की ही सन्तानें हैं। सबको अपना जीवन जीने का पूरा अधिकार है। उनकी हिंसा वर्जित है। पशुओं का मांस भक्षण अवैदिक व अमानवीय कृत्य होने से त्याज्य है। ईश्वर के न्याय में यह दण्डनीय एवं नरकगामी है। विद्या अध्ययन का अधिकार स्त्री शूद्रों सहित समाज के हर स्त्री पुरुष को उसकी बौद्धिक क्षमता के अनुसार है। विद्याध्ययन में राजा व साधारण नागरिक के पुत्र सभी को एक समान निःशुल्क शिक्षा का भाव व सिद्धान्त है। ऐसे अनेक व सभी गुण वैदिक विचारधारा व मत में है और एक भी बुराई नहीं है। वेद ही संसार के सभी मनुष्यांं का पूर्ण सर्वांगीण धर्म है। सबको वेद रूपी इस कल्पतरू की ही शरण में आकर अपने जीवन का उत्थान करना चाहिये। ईश्वर व आत्मा का साक्षात्कार भी वैदिक धर्म के आचरण व विश्वास से ही हो सकता है। अन्यत्र यह असम्भव है। वैदिक धर्म पालन से मनुष्य का पुनर्जन्म भी श्रेष्ठ बनता है और अन्यत्र विचारधाराओं से उन्नति के स्थान पर अवनति होती है। इतने लाभ होने पर भी यदि हम वैदिक धर्म और उसके प्रमुख सिद्धान्त ग्रन्थ ‘सत्यार्थप्रकाश’ को नहीं अपनाते तो यह हमारा दुर्भाग्य ही है। इसका परिणाम दुःखद ही होना है। अतः सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर ज्ञानी बने और दुःखों से मुक्त होकर आत्मा की सच्ची उन्नति करें। ओ३म् शम्।

**-मनमोहन कुमार आर्य**

**पताः 196 चुक्खूवाला-2**

**देहरादून-248001**

**फोनः09412985121**